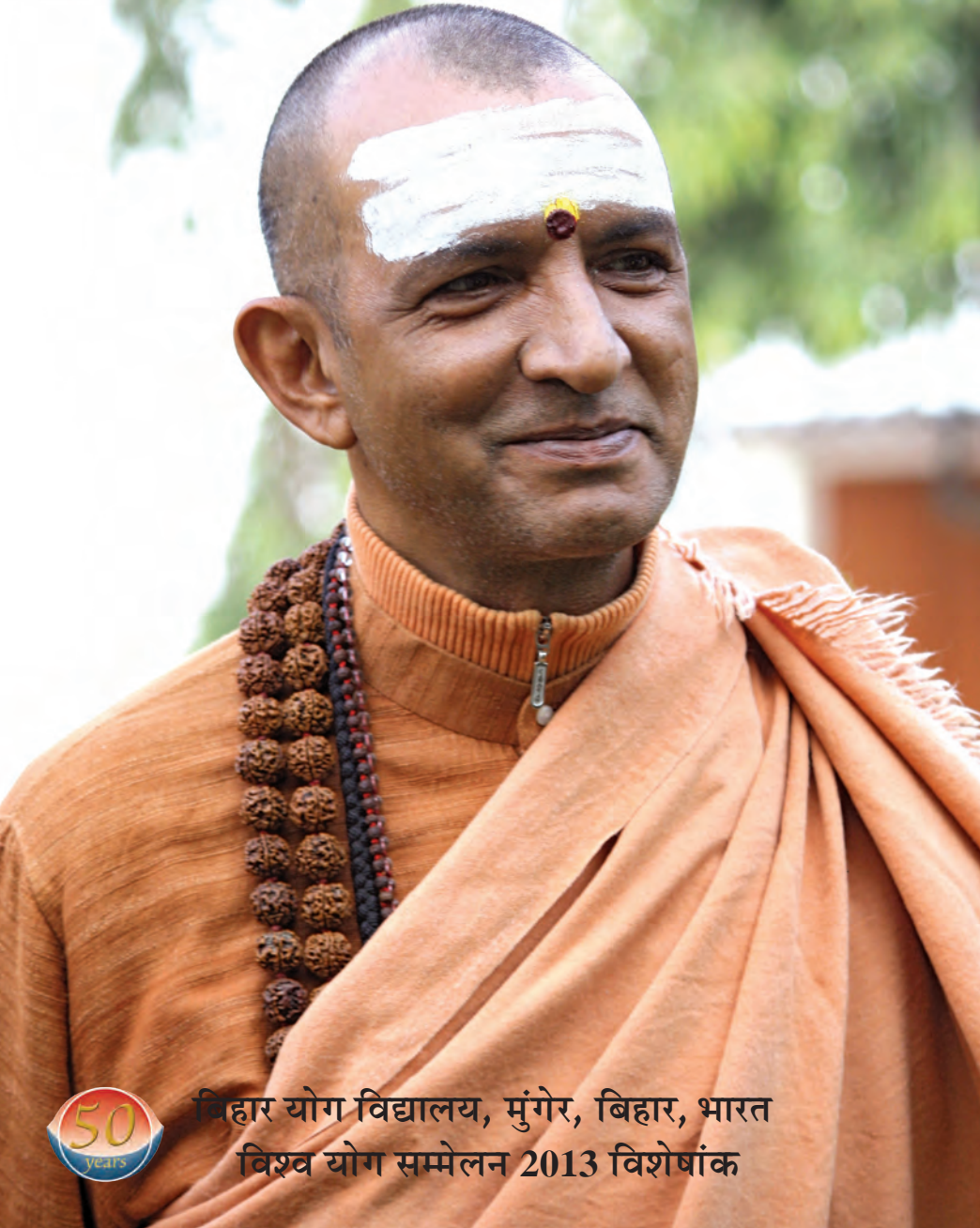


योगविद्या

वर्ष 3 अंक 2

मार्च 2014

सदस्यता डाकखर्च - ₹100



बिहार योग विद्यालय, मुंगेर, बिहार, भारत
विश्व योग सम्मेलन 2013 विशेषांक



हरि: ॐ

योग विद्या का सम्पादन, मुद्रण और प्रकाशन स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के संन्यासी शिष्यों द्वारा स्वास्थ्य लाभ, आनन्द और प्रकाश प्राप्ति के इच्छुक व्यक्तियों के लिए किया जाता है। इसमें बिहार योग विद्यालय, बिहार योग भारती, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट तथा योग शोध संस्थान के क्रियाकलापों की जानकारीयाँ प्रकाशित की जाती हैं।

सम्पादक – स्वामी शक्तिमित्रानन्द सरस्वती

योग विद्या मासिक पत्रिका है। देर से सदस्यता ग्रहण करने पर भी उस वर्ष के जनवरी से दिसम्बर तक के सभी अंक भेजे जाते हैं।

बिहार योग विद्यालय, गंगादर्शन, फोर्ट, मुंगेर, 811201, बिहार, द्वारा प्रकाशित।

थॉमसन प्रेस इण्डिया लिमिटेड, फरीदाबाद, 121007, हरियाणा में मुद्रित।

© Bihar School of Yoga 2014

पत्रिका की सदस्यता एक वर्ष के लिए पंजीकृत की जाती है। कृपया अपने आवेदन अथवा अन्य पत्राचार निम्नलिखित पते पर करें –

बिहार योग विद्यालय
गंगा दर्शन,
फोर्ट, मुंगेर, 811201
बिहार

☒ अन्य किसी जानकारी हेतु स्वयं का पता लिखा और डाक टिकट लगा हुआ लिफाफा भेजें, जिसके बिना उत्तर नहीं दिया जायगा।

पृष्ठ संख्या: 58

कवर फोटो: स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती, नव वर्ष दिवस, गंगा दर्शन

अन्दर के रंगीन फोटो: 1 & 6: सत्यम् वाटिका; 2: नव वर्ष दिवस, गंगा दर्शन; 3: योगदृष्टि सत्संग श्रृंखला, सत्यम् वाटिका; 4: स्वामी धर्मशक्ति (अम्माजी) का समाधि-स्थल, सत्यम् उद्यान; 5: बसंत पंचमी, यज्ञशाला; 7: गुरु पूर्णिमा, गंगा दर्शन; 8: गुरु भक्ति अनुष्ठान, सत्यम् उद्यान



आध्यात्मिक मार्गदर्शन

योग साधना

साधना का तात्पर्य उस आध्यात्मिक अभ्यास से है जो साधक को ईश्वर-साक्षात्कार की ओर अग्रसर करता है। साधना के बिना कोई अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता।

जीवन का लक्ष्य चार विभिन्न मार्गों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। कर्मयोग सक्रिय स्वभाव वाले व्यक्ति, भक्तियोग भावुक स्वभाव वाले व्यक्ति, राजयोग अंतर्मुखी एवं रहस्यवादी स्वभाव वाले व्यक्ति तथा ज्ञानयोग संकल्प एवं विवेकयुक्त व्यक्ति के लिए उचित है।

मनुष्य की बुद्धि, भावना और कर्म, सभी का सर्वांगीण विकास होना चाहिए, तभी पूर्णता आएगी। एकांगी विकास वांछनीय नहीं है। ये चारों मार्ग, एक दूसरे के प्रतिरोधी होने के बजाय, इस बात को दर्शाते हैं कि योग की विभिन्न पद्धतियों का आपस में सम्पूर्ण समन्वय है। अन्ततः सभी मार्ग एक बन जाते हैं।

– श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

बिहार योग विद्यालय, गंगादर्शन, फोर्ट, मुंगेर-811201, बिहार के लिए स्वामी ज्ञानभिक्षु सरस्वती द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित

मुद्रक – थॉमसन प्रेस इण्डिया लिमिटेड, 18/35 माइलस्टोन, दिल्ली मथुरा रोड, फरीदाबाद – 121007, हरियाणा

स्वामित्व – बिहार योग विद्यालय

सम्पादक – स्वामी शक्तिमित्रानन्द सरस्वती

योगविद्या

वर्ष 3 अंक 2 • मार्च 2014
(प्रकाशन का 52 वाँ वर्ष)



विषय सूची

योगविद्या का यह विशेषांक बिहार
योग विद्यालय की वर्ष 2013 की
गतिविधियों का संकलन है

- 2 योगदृष्टि सत्संग शृंखला
- 5 बिहार योग विद्यालय के कार्यक्रम
- 17 विभिन्न सत्र
- 19 योग शोध पुस्तकालय
- 20 योग तरी तीरे तीरे
- 39 योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट
- 46 डिजिटल सामग्री
- 47 ऑडियो सीडी
- 49 डीवीडी
- 50 बाल योग मित्र मण्डल
- 53 युवा योग मित्र मण्डल

बिहार योग विद्यालय की गतिविधियाँ – 2013

योगदृष्टि सत्संग शृंखला



सत्संग का तात्पर्य सत्य के सान्निध्य, सत्पुरुषों की संगति से है। किसी प्रवचन या व्याख्यान मात्र को सत्संग नहीं कहते। सत्संग वह प्रेरणा है जो किसी सात्विक व्यक्ति या वातावरण से ग्रहण करके अपने भीतर धारण की जाती है। जब आप किसी साधु-संत से मिलते हैं और वे शांत, करुणामयी आँखों से आपकी ओर देखते हैं, तो वह कृपामयी दृष्टि भी एक प्रकार का सत्संग है। उस दृष्टि से आपके अंतःकरण में कुछ परिवर्तन आता है, आप किसी सकारात्मक गुण या प्रतिभा से अपने आपको जोड़ते हैं। एक मधुर मुस्कान या एक प्रसन्नचित्त चेहरा आपको उत्साहित और प्रेरित कर सकता है। यह भी एक तरह का सत्संग है। अपने उत्साह, आशा, प्रेरणा और संतोष को दिनभर दूसरों के साथ बाँटना सत्संग नहीं तो और क्या है।

प्रसन्नता, ज्ञान, प्रेम और करुणा को सर्वत्र प्रसारित करना सच्चा सत्संग है। मनुष्य को प्रेरित और सक्रिय करने वाली कोई भी सकारात्मक अभिव्यक्ति सत्संग कहलाती है। चाहे वह एक वाक्य हो या लम्बा-चौड़ा व्याख्यान, चाहे वह किसी प्रश्न का उत्तर हो या मात्र एक सिद्ध पुरुष का सान्निध्य, सच्चा सत्संग व्यक्ति के आंतरिक स्वभाव को पूरी तरह रूपान्तरित कर देता है। सत्संग हृदय के दुःख और विषाद को मिटाकर मनुष्य की भावनाओं में ऊर्जा, स्फूर्ति और आनन्द लाता है। यह मन की भ्रांतियों एवं कुण्ठाओं को हटाकर आशा का संचार करता है। सच पूछिए तो सत्संग हमें अपने व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों को उजागर करने में सक्षम बनाता है।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



2 से 6 जनवरी-बिहार योग विद्यालय का इतिहास

गंगा दर्शन में 2 से 6 जनवरी तक आयोजित आश्रम जीवन-योग-सत्संग सप्ताह में योगदृष्टि सत्संग शृंखला भी शामिल थी। इस सत्संग शृंखला में स्वामी निरंजनानन्द जी के प्रवचन दो विषयों पर हुए-बिहार योग विद्यालय का इतिहास तथा तंत्र शास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर प्रश्नोत्तर। सबेरे के सत्रों का प्रारम्भ संन्यास प्रशिक्षार्थियों द्वारा संचालित मंत्र पाठ, हवन एवं कीर्तन से होता था। इन सत्रों में बिहार योग विद्यालय के वरिष्ठ आचार्यों एवं संन्यासियों के प्रवचन भी शामिल थे। इस कार्यक्रम में भारत के अलावा विभिन्न देशों के सैकड़ों साधक आश्रम के यौगिक वातावरण में नई प्रेरणा तथा शिक्षा प्राप्त करने हेतु आए थे।



5 से 8 मार्च-अध्यात्म के अध्याय

इस सत्संग शृंखला का आयोजन स्थानीय शिवालय मंदिर में किया गया था। 'आध्यात्मिक जीवन वास्तव में क्या है?' - इस प्रश्न को अपने सत्संगों का आधार बनाकर स्वामीजी ने सबसे पहले गृहस्थों और संन्यासियों की साधना के अंतर को समझाया। फिर श्री स्वामी शिवानन्द जी की शिक्षाओं का निरूपण करते हुए बतलाया कि किस प्रकार उन्होंने विभिन्न साधनाओं द्वारा आत्मशुद्धि प्राप्त करने पर बल दिया





था। श्री स्वामी सत्यानन्द जी के लिए आध्यात्मिक जीवन का तात्पर्य आत्मभाव के विकास से था। कार्यक्रम के अंतिम दिन स्वामीजी ने मुंगेर के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के लिए व्यावहारिक साधना का निरूपण किया, जिसे उन्होंने बड़ी रुचि और उत्साह के साथ ग्रहण किया।

कार्यक्रम के दौरान आश्रम के संन्यासियों, संन्यास प्रशिक्षार्थियों तथा बाल योग मित्र मण्डल के बच्चों ने मंत्रपाठ, स्तोत्रपाठ, हवन तथा कीर्तन एवं रामायण मण्डली की महिलाओं ने रामायण का सुमधुर पाठ किया।

3 से 6 मई—योग के सिद्धान्त से साक्षात्कार तक

गंगा दर्शन में आयोजित इस सत्संग श्रृंखला में स्वामी निरंजनानन्द ने योग के चार आयामों—योग दर्शन, योग मनोविज्ञान, प्रायोगिक योग विज्ञान तथा यौगिक जीवनशैली (जिसे यौगिक पर्यावरण विज्ञान भी कहते हैं) के बारे में चर्चा की।

स्वामीजी ने बतलाया कि इस जीवन-यात्रा में जीवात्मा का प्रयोजन परमात्मा से मिलना है। योग-मार्ग का भी यही प्रयोजन है—व्यष्टि चेतना का समष्टि चेतना से संयोग। माया की जो परतें व्यक्तिगत चेतना के विकास में अवरोध डालती हैं, उन परतों को हटाने की क्रमिक प्रक्रिया ही योग है। यम-नियम, प्रत्याहार और प्रतिपक्ष भावना कुछ ऐसी व्यावहारिक यौगिक विधियाँ हैं, जिनका उपयोग हर कोई कर सकता है।

जीवन में योग का सही प्रयोग यौगिक जीवनशैली कहलाता है, जिसमें व्यक्ति प्रकृति और ईश्वर के नियमों का आदर करता है। यही यौगिक पर्यावरण विज्ञान का मूल सिद्धान्त भी है, जिसमें हम अपनी महत्वाकांक्षाओं के बजाय अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देते हैं। ऐसा करने से हम भोग से योग की ओर बढ़ते हैं, उपभोक्ता मानसिकता की बजाय संरक्षक मानसिकता विकसित करते हैं।

बिहार योग विद्यालय के कार्यक्रम

नव वर्ष

गंगा दर्शन विश्व योगपीठ द्वारा 1 जनवरी 2013 को नववर्ष का स्वागत सुन्दरकाण्ड के पाठ, विष्णु सहस्रनाम हवन एवं श्री हनुमान चालीसा के 108 बार पाठ से किया गया। सन् 2008 से प्रारम्भ यह साधना गंगा दर्शन में नववर्ष के स्वागत की वार्षिक परम्परा है। संन्यासियों, बाल योग मित्र मण्डल के बच्चों तथा संन्यास प्रशिक्षार्थियों ने मुंगेर के हजारों भक्तों के साथ मिलकर हर्ष, उल्लास और भक्ति से परिपूर्ण वातावरण में यह अखण्ड पाठ सम्पन्न किया।



बिहार योग विद्यालय के स्वर्ण जयन्ती वर्ष का शुभारम्भ

12 फरवरी को बिहार योग विद्यालय के स्वर्ण जयन्ती वर्ष का शुभारम्भ एक विशेष हवन और श्री विद्या आराधना से हुआ, जिसे तिरुईगोइमलइ, तमिल नाडु के ललिता महिला समाजम् से आई योगिनियों ने सम्पन्न किया। सम्पूर्ण चार-दिवसीय कार्यक्रम के दौरान यह मंगलकारी पूजा और आराधना जारी रही।



स्वामी निरंजनानन्द तथा स्वामी सत्यसंगानन्द ने इस दिन श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के जीवन और मिशन को समर्पित 'सत्यम् वाटिका' का उद्घाटन भी किया। इस सुन्दर वाटिका में 30 से अधिक आकर्षक फलक हैं, जो इस संस्था और इसके प्रणेताओं का इतिहास दर्शाते हैं।



श्री स्वामी सत्यानन्द जी की प्रथम शिष्या स्वामी धर्मशक्ति सरस्वती, जिन्हें आश्रम के अंतेवासी प्यार से अम्माजी पुकारा करते थे, 12 फरवरी को दोपहर 12 बजे समाधि में लीन हो गईं। वे बिहार योग विद्यालय की आधारस्तम्भ थीं, जो लोगों के जीवन में सदा आशा और प्रेरणा संचारित किया करती थीं। अगले दिन मंत्र और स्तोत्र पाठ के साथ सैकड़ों भक्तों





और श्रद्धालुओं की उपस्थिति में स्वामी धर्मशक्ति को अखाड़ा परिसर में विधिवत् भू-समाधि दी गई।

कार्यक्रम में साकेत धाम आश्रम, जबलपुर के आचार्य और प्रसिद्ध कथाकार, स्वामी गिरीशानन्द भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने अपने दैनिक सत्संगों में श्रीकृष्ण भक्ति का सुन्दर निरूपण किया।



प्रतिदिन संध्या के समय गंगा दर्शन का कारपाक रंगमंच में परिवर्तित हो जाता था। पहले दो दिन चेन्नई से आए भक्तों ने यहाँ श्री स्वामी सत्यानन्द के जीवन पर आधारित नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की। त्रिवर्षीय संन्यास सत्र के प्रतिभागियों ने भी स्वामी सत्यानन्द और स्वामी निरंजनानन्द के जीवन पर सुन्दर नृत्य-नाटिकाएँ प्रस्तुत कीं।



15 फरवरी को बिहार योग विद्यालय के 50 वर्ष पूरे हुए। प्रातःकालीन कार्यक्रम में योगिनियों ने अंतिम पूजा और पूर्णाहुति सम्पन्न की। दोपहर के सत्र में बिहार योग विद्यालय के अध्यक्ष, स्वामी सूर्यप्रकाश ने उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरु-परम्परा द्वारा प्रज्वलित ज्योति को जीवित रखने के लिए तीन चीजों पर ध्यान देना चाहिए—योग का अनवरत प्रचार-प्रसार, आत्म-सुधार का निरंतर प्रयास और योग की विधियों का समाज के हित में प्रयोग।



इस अवसर पर श्री शिव कुमार रंगटा, श्री धनंजय शर्मा और श्री डी.पी. यादव जैसे मुंगेर के प्रतिष्ठित नागरिकों ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये। स्वामी शंकरानन्द ने भगवद् गीता में दिये उस आश्वासन को दुहराया कि भगवान अपने भक्त को सभी पापों से मुक्त कर देते हैं। उन्होंने कहा कि गुरु-जनों और संत-महात्माओं के माध्यम से ही भगवान अपने इस वचन को क्रियान्वित करते हैं।

अपने उद्बोधन में स्वामी सत्यसंगानन्द ने कहा, 'जिस तरह परमाणु युग में भौतिक पदार्थ का विस्फोट किया गया, उसी तरह इस नए युग में मनुष्य की

आंतरिक ऊर्जा को विमुक्त कर एक नयी चेतना को जन्म देना है। स्वामी सत्यानन्द जी ने इसके लिए हमें दो उपकरण प्रदान किये हैं—योग और यज्ञ। यदि इनका ठीक ढंग से उपयोग किया गया तो अवश्य मानवता में एक नयी चेतना अवतरित होगी।’

स्वामी निरंजनानन्द ने इस शुभ अवसर पर कहा, ‘संस्था भवनों से नहीं, मनुष्यों से बनती है। आप सब लोगों की वजह से ही बिहार योग विद्यालय अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रहा है, जिसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं। बिहार योग विद्यालय एक संन्यासी का सत्संकल्प है, जो दैवी कृपा से साकार हुआ है।’

चैत्र नवरात्रि

11 से 19 अप्रैल तक गंगा दर्शन में नवरात्रि अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। अनुष्ठान के पहले तीन दिन गंगा दर्शन में माँ दुर्गा की आराधना की गई, उसके बाद तीन दिन तक हवन और सत्संग के साथ माँ लक्ष्मी की उपासना पादुका दर्शन में हुई, और अंत के तीन दिन सत्यम् वाटिका में माँ सरस्वती की आराधना को समर्पित रहे।

अक्षय तृतीया

13 मई को अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर गंगा दर्शन में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें श्री विष्णु सहस्रनाम एवं अन्य स्तोत्रों का पाठ शामिल था।

बुद्ध पूर्णिमा

25 मई को महात्मा बुद्ध के निर्वाण दिवस, बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में भक्तों और अतिथियों को अखाड़ा में आयोजित विशेष कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम स्वामी धर्मशक्ति की स्मृति में समर्पित था, जिनका जन्म सन् 1924 में इसी दिन हुआ था। इस अवसर पर स्वामी निरंजन ने गुरु और श्रीराम को समर्पित हवन सम्पन्न किया। कार्यक्रम के अंत में सुन्दरकाण्ड का पाठ किया गया।



गुरु पूर्णिमा



गुरु उस मार्ग से गुज़र चुके हैं जिसपर हम अभी चल रहे हैं। गुरु ने अविद्या और अंधकार को, राग और द्वेष के आकर्षण-विकर्षण को झेला है और उनपर विजय प्राप्त कर अपने आपको प्रकाश में स्थापित किया है।

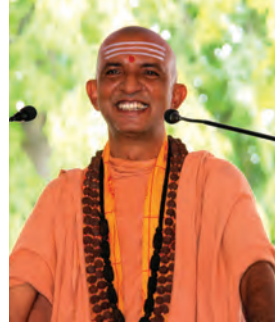
गुरु भी किसी समय हमारी तरह एक साधारण व्यक्ति थे, लेकिन उन्होंने अपनी अविद्या, अपने मन के अंधकार, अपनी इन्द्रियों, वासनाओं, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, क्रोध, विषाद, आसक्ति आदि दुर्बलताओं के साथ संघर्ष किया और उनपर विजय प्राप्त की। अगर वे अपना मानसिक संतुलन और स्पष्टता बनाए रखते हुए स्वयं को दिव्यता में स्थापित कर पाए, तो वह इसलिए कि चार चीजें उनके साथ रहीं— श्रद्धा और विश्वास जो उन्हें स्वयं पर था, वह साधना जो उन्होंने सिखलाई गई, वह शिक्षा और निर्देश जो उन्हें गुरु से प्राप्त हुए और ईश्वर की कृपा जो सहज रूप से उन्हें उपलब्ध हुई।

हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि गुरु वह मनुष्य है जिसने अज्ञान के अंधकार का सामना करके स्वयं को उस तमोमयी अवस्था से उबारा है। गुरु पूर्णिमा के दिन हम ऐसे महापुरुषों को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

18 से 21 जुलाई तक स्वामी निरंजनानन्द ने गंगा दर्शन में गुरु पूर्णिमा आराधना और सत्संग शृंखला संचालित की, जिसमें देश-विदेश के 3000 से अधिक साधक भाग लेने पहुँचे। अपने सत्संगों में स्वामीजी ने बतलाया कि किस प्रकार षड्विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य) मनुष्य के विचारों, भावनाओं और स्वभाव को प्रभावित करते हैं।

22 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हजारों की संख्या में स्थानीय भक्त और शिष्य गुरु पादुका पूजन के लिए गंगा दर्शन पधारे। सत्यम् सहस्रनामावलि के पाठ के साथ स्वामीजी ने श्री स्वामी सत्यानन्द जी का अभिषेक-पूजन और आचार्यों ने हवन सम्पन्न किया। सौन्दर्य लहरी, सुन्दर काण्ड तथा अन्य भावपूर्ण स्तोत्रों के पाठ के साथ स्वामीजी ने 1000 से अधिक साधकों को मंत्र, जिज्ञासु संन्यास एवं कर्म संन्यास में दीक्षा प्रदान की।





संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक ऐसे भाव को जगाने का माध्यम है जो शुद्ध, पवित्र और आनन्दप्रदायक हो। ऐसे भावों का जागरण ही संगीत का वास्तविक प्रयोजन है। साहित्य का ज्ञान बुद्धि के द्वार खोलता है; कला का ज्ञान, चरित्र और स्वभाव को सुधारता है; और संगीत का ज्ञान हृदय के कपाट खोलता है। अच्छा मनुष्य बनने के लिए हमें इन तीनों आयामों पर समुचित ध्यान देना चाहिए। संगीत में इतनी शक्ति है कि वह हमारी मनोदशाओं को, यहाँ तक कि सम्पूर्ण वातावरण और प्रकृति को भी पूरी तरह रूपान्तरित कर सकता है।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

26 से 28 अगस्त तक श्री प्रह्लाद सिंह टिपणिया और उनके साथियों ने माल्वा क्षेत्र की लोकशैली में प्रस्तुत कबीर भजनों और पदावलियों से गंगा दर्शन के अन्तेवासियों और स्थानीय नागरिकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पद्मश्री की उपाधि से विभूषित श्री टिपणिया की संगीतमयी प्रस्तुतियाँ मात्र मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि संत कबीर की सामाजिक और आध्यात्मिक विचारधाराओं से जोड़ने वाली सशक्त कड़ियाँ हैं। वे हम सभी को धार्मिक मतान्धता, अन्धविश्वास, ढोंग और आडम्बर से ऊपर उठकर प्रेम, सद्भाव और भाईचारा अपनाने के लिए निरंतर प्रेरित करती हैं।

कार्यक्रम का अंतिम दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का शुभ अवसर था, और इस दिन बाल योग मित्र मण्डल के बच्चों ने भी कबीर मण्डली के साथ कीर्तन गायन में भाग लिया। इस अवसर पर दिल्ली के दश-वर्षीय कुमार सात्त्विक और अष्ट-वर्षीय कुमारी आहुति ने सुमधुर शास्त्रीय गायन भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन स्वामी निरंजनानन्द ने एक भावपूर्ण कीर्तन से किया, जिसने सभी श्रोताओं को आह्लादित कर दिया।





अश्विन नवरात्रि

5 से 14 अक्टूबर तक गंगा दर्शन के संन्यासियों, संन्यास प्रशिक्षार्थियों और बाल योग मित्र मण्डल के सदस्यों ने नवरात्रि साधना सम्पन्न की। साधना के अंतर्गत स्तोत्रपाठ, भजन, कीर्तन, हवन और सत्संग के कार्यक्रम सत्यम् वाटिका में आयोजित किए गए।

विश्व योग सम्मेलन तथा बिहार योग विद्यालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह



23 से 27 अक्टूबर तक मुंगेर के नागरिकों ने पोलो मैदान में आयोजित एक बृहत् विश्व योग सम्मेलन की मेजबानी की। साथ ही गंगा दर्शन परिसर में बिहार योग विद्यालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह धूमधाम से मनाया गया। पूरे कार्यक्रम में स्वामी निरंजनानंद सर्वत्र उपस्थित रहकर सभी गतिविधियों का कुशलतापूर्वक निर्देशन कर रहे थे। उनकी वाणी और व्यवहार में विनोदशीलता और गम्भीर विद्वत्ता का अद्भुत मिश्रण था, साथ ही आने वाले समय में सत्यानन्द योग के समक्ष चुनौतियों की गहन समझ भी स्पष्टतः परिलक्षित हो रही थी। इस अवसर पर स्वामी सत्यसंगानन्द की गरिमामयी उपस्थिति और उनके प्रबोधक सत्संगों से सभी प्रतिभागियों को प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।



सम्मेलन के दौरान विभिन्न परम्पराओं के अनेक संतों, आचार्यों और मूर्धन्य विद्वानों ने योग तथा अध्यात्म सम्बन्धी विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये तथा योग के क्षेत्र में अपने अनुभवों को सबके सम्मुख प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में 56 देशों और भारत के 23 राज्यों से आए लगभग 20000 प्रतिनिधि शामिल हुए। साथ ही 62 देशों के 15000 से अधिक योगप्रेमियों ने इंटरनेट के माध्यम से विश्व योग सम्मेलन की गतिविधियों का अवलोकन किया।



दोपहर के समय पोलो मैदान तथा गंगा दर्शन में योग के अनेक व्यावहारिक विषयों पर वर्कशॉप भी आयोजित किये गये। संध्या के समय साकेत धाम

आश्रम, जबलपुर के स्वामी गिरीशानन्द सरस्वती ने श्रीमद्भागवत पुराण के नव योगेश्वर संवाद की अत्यंत सरस और सुबोध व्याख्या प्रस्तुत की तथा उपस्थित भक्तगणों को अपने जीवन में सेवा और भक्ति का समावेश करने के लिए प्रेरित किया।

सम्मेलन के पाँचों दिन गंगा दर्शन के सत्यम् उद्यान परिसर में वाराणसी के विद्वान् आचार्यों ने विभिन्न हवन सम्पन्न किये। गंगा दर्शन में श्री स्वामी सत्यानन्द जी के जीवन और शिक्षाओं पर आधारित एक प्रेरक चलचित्र 'सत्यम्' का भी निरंतर प्रदर्शन किया गया। सत्यम् वाटिका परिसर में प्रातः 6 बजे से सायं 6 बजे तक विभिन्न देशों की कीर्तन मण्डलियों ने अखण्ड कीर्तन संचालित किया। साथ ही सत्यम् वाटिका में 'योगदृष्टि' नामक एक 5D थियेटर का भी उद्घाटन किया गया। संध्या के समय कारपार्क एक सुन्दर रंगमंच में परिवर्तित हो जाता था जहाँ गुरु परम्परा को समर्पित संगीत, नृत्य और नाटक का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता था।

प्रतिदिन सत्यम् योग प्रसाद के पण्डाल में प्रतिनिधियों को बिहार योग विद्यालय द्वारा प्रकाशित बृहत् पुस्तक, सीडी एवं डीवीडी संग्रह को देखने और अपनी मनपसन्द पुस्तकों का चयन करने का अनुपम अवसर प्राप्त होता था।

300 से अधिक साधकों को मंत्र में, 200 से अधिक साधकों को जिज्ञासु संन्यास में और 150 से अधिक साधकों को कर्म संन्यास में दीक्षा भी प्राप्त हुई।

योगविद्या तथा पादुका दर्शन परिसरों में भोजन की व्यवस्था की गई थी, जहाँ बड़े शांत और व्यवस्थित वातावरण में सभी प्रतिनिधि प्रातः, मध्याह्न और संध्या के समय प्रसाद ग्रहण करते थे।

संन्यासियों और स्वयंसेवकों के अतिरिक्त बाल योग मित्र मण्डल के 300 से अधिक तथा युवा योग मित्र मण्डल के 600 से अधिक सदस्यों ने भी हर क्षेत्र में बड़ी दक्षता और तत्परता के साथ सहयोग दिया।



दीपावली

दीपावली दीपों का पर्व है। जब भगवान श्रीराम रावण को पराजित कर अपने राज्य लौटे तो अयोध्यावासियों ने पूरे नगर और राज्य को असंख्य दीपों से आलोकित कर दिया था। अमावस्या की रात को पूरा नगर और राज्य एक रत्न की तरह जगमगा रहा था।

योगियों के लिए दीपक और ज्योति अनाहत चक्र के प्रतीक हैं। हमारे जीवन में अनाहत चक्र प्रेम और भावना का स्थान है। इसलिए जब श्रीराम अयोध्या लौटे, वहाँ अंधेरा नहीं, उजाला था। अनाहत चक्र में जब प्रेम जागृत होता है तब सभी स्वार्थपरक भावनाओं का अंधेरा तिरोहित हो जाता है। स्वार्थपरक भावनाएँ ही हमारे जीवन में अंधकार लाती हैं। योगियों ने दीपावली को एक ऐसे पर्व के रूप में देखा है जब हृदय के भीतर प्रेम, दया और करुणा जैसी सद्भावनाओं की ज्योति आलोकित होती है।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



3 नवम्बर को सत्यम् वाटिका के रंगमंच में हवनात्मक अनुष्ठान के साथ दीपावली मनाई गई। इसके पश्चात् कीर्तन, भजन और फायर-डॉस का आकर्षक एवं मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर स्वामीजी ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए दीपावली के आध्यात्मिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। अंत में सभी अतिथियों को सैंकड़ों दीपों के प्रकाश में जगमगाते सत्यम् उद्यान परिसर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।



क्रिसमस



ईसा मसीह के जीवन और उनकी शिक्षाओं ने इतिहास के पन्नों पर अमिट छाप छोड़ी है। क्रिसमस के दिन को हम ऐसे महापुरुष के जन्मदिन के रूप में मनाते हैं, जिनका जीवन सदियों से दुनियाभर के लाखों-करोड़ों लोगों को प्रेरित करता आया है। जिस प्रेम, करुणा और विनम्रता की वे प्रतिमूर्ति थे, वही सद्गुण आज हजारों-लाखों लोगों को जीवन में सदाचार के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यह उल्लास का दिन है और साथ ही मनन का भी। हमें इस बात पर चिंतन-मनन करना चाहिए कि हम भी दैवी कृपा के पात्र हो सकते हैं और उसे प्राप्त कर जीवन की नदी को पार कर सकते हैं।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

25 दिसम्बर को गंगा दर्शन में क्रिसमस बड़े आनन्द और उल्लास के साथ मनाई गई। इस दिन सुबह और शाम विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। सबेरे का कार्यक्रम ज्योति मंदिर में था, जिसमें ईशु नामावली एवं श्री स्वामी सत्यानन्द अष्टोत्तरशत नामावली के हवन के पश्चात् ईसा मसीह और स्वामी सत्यानन्द जी को समर्पित भजन और कीर्तन प्रस्तुत किए गए।

संध्या कार्यक्रम साधना हॉल में आयोजित किया गया था जिसे इस विशेष अवसर के लिए बड़े सुन्दर ढंग से सजाया गया था। सर्वप्रथम आश्रम के संन्यासियों, संन्यास प्रशिक्षार्थियों और अतिथियों ने क्रिसमस कैरोल्स का सुन्दर गायन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् बाल योग मित्र मण्डल के बच्चों ने सैंटा क्लॉस के साथ 'जिन्नाल बेल्स' गीत पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। श्री स्वामी सत्यानन्द जी के





जन्मदिवस की स्मृति में 'सत्यम्' फिल्म के पहले भाग का प्रदर्शन भी किया गया।



नव वर्ष की पूर्वसंध्या

गंगा दर्शन में नव वर्ष की पूर्वसंध्या पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सर्वप्रथम श्रीगणेश-महिम्न-स्तोत्रम् का पाठ किया गया और तत्पश्चात् श्री विष्णु सहस्रनाम हवन सम्पन्न किया गया। इसके बाद नृत्य और संगीत का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें सन् 2013 की गतिविधियों और आने वाले वर्ष के संकल्प को बड़े कलात्मक और प्रेरक ढंग से उजागर किया गया।



सत्र

प्राचीन काल में शिक्षण कार्य ऋषि-मुनियों और साधु-संन्यासियों द्वारा किया जाता था। शिक्षा प्रदान करने के लिए मनीषीजन गुरुकुलों की स्थापना करते थे। वहाँ विद्यार्थियों को भौतिक विषयों के साथ-साथ आध्यात्मिक विषय भी सिखाए जाते थे ताकि गुरु के सान्निध्य में बारह वर्ष व्यतीत करने के बाद वे विद्यार्थी समाज में जीविकोपार्जन करने के साथ अपनी मानसिक अभिव्यक्तियों को सुव्यवस्थित रखने में भी सक्षम हो सकें। भारत में यह गुरुकुल परम्परा एक हजार साल पहले तक बहुत सशक्त परम्परा थी।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

विश्व योग सम्मेलन की तैयारियों की वजह से बिहार योग विद्यालय के प्रायः सभी नियमित सत्र स्थगित रहे; केवल निम्नलिखित सत्र संचालित किए गए—

गुरुकुल जीवनशैली सत्र

फरवरी से अक्टूबर तक गंगा दर्शन में नौ महीने का गुरुकुल जीवनशैली सत्र संचालित किया गया जिसमें ऑस्ट्रेलिया, बल्गेरिया, भारत, ईरान, न्यू ज़ीलैण्ड, सर्बिया और दक्षिण कोरिया के 18 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। सत्र की कक्षाओं का संचालन स्वामी





कर्मकरुणा, स्वामी उपासना एवं स्वामी योगतीर्थ ने किया।

यौगिक विज्ञान एवं जीवनशैली सत्र

गंगा दर्शन में जून से अगस्त तक संचालित त्रैमासिक यौगिक विज्ञान एवं जीवनशैली सत्र में बिहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड तथा नेपाल के 17 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। सत्र की आसन-प्राणायाम कक्षाएँ सं. सौम्यशक्ति द्वारा, योगनिद्रा और ध्यान की कक्षाएँ सं. ज्ञानशक्ति द्वारा तथा योग दर्शन एवं सिद्धान्त की कक्षाएँ स्वामी ज्ञानभिक्षु एवं स्वामी निर्मलानन्द द्वारा संचालित की गईं।



विशेष योग सत्र

5 से 12 जुलाई तक इरिमी, जमालपुर के 18 रेल अधिकारियों ने गंगा दर्शन में संचालित योग सत्र में भाग लिया। सत्र की प्रातःकालीन आसन-प्राणायाम कक्षाओं का संचालन स्वामी आत्माभिषेक ने, योगनिद्रा एवं ध्यान की कक्षाओं का संचालन सं. सौम्यशक्ति ने तथा सैद्धान्तिक कक्षाओं एवं सत्संगों का संचालन स्वामी शंकरानन्द, स्वामी ज्ञानभिक्षु, स्वामी निर्मलानन्द तथा स्वामी तपोनिधि ने किया। कक्षाओं के अलावा प्रतिभागियों ने आश्रम की विभिन्न गतिविधियों में उत्साह के साथ भाग लिया।



योग शोध पुस्तकालय



विश्व योग सम्मेलन की तैयारियों की वजह से योग शोध पुस्तकालय वर्षभर बन्द रहा। इस अवधि में नई पुस्तकों का संग्रह नहीं हुआ और पुस्तकालय की ग्रन्थ संख्या लगभग 30,000 पर कायम रही।

साथ ही वर्ष के दौरान पुस्तकालय का कार्यालय विश्व योग सम्मेलन की प्रशासनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। सम्मेलन के दौरान इसका उपयोग आश्रम अन्तेवासियों के अस्थायी निवास स्थान के रूप में भी हुआ।



योग तरी तीरे तीरे



योग शिक्षक के लिए सिर्फ अभ्यास सिखला देना काफी नहीं। शिक्षण कला के साथ-साथ शिक्षक में विद्यार्थियों के प्रति प्रेम और सहानुभूति; उनकी आवश्यकताओं को समझने की क्षमता और उनकी सहायता करने की हार्दिक अभिलाषा भी होनी चाहिए। शिक्षक को हर विद्यार्थी की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, प्रतिभाओं और दुर्बलताओं का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि इन्हें समझे बगैर योग सिखलाना सम्भव नहीं।

यदि शिक्षकों की योग शिक्षण में रुचि नहीं पर किसी विवशता या मजबूरी के कारण वे योग सिखाते हैं, तो विद्यार्थियों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसके विपरीत अगर शिक्षकों को योग सिखाने में आनन्द आता है और उनके व्यक्तित्व से सकारात्मक स्पन्दन निःसृत होते हैं तो उनके विद्यार्थी अभ्यास सीखने के साथ-साथ सूक्ष्म स्तर पर भी बहुत कुछ ग्रहण करेंगे। यह बात हमेशा याद रखना कि योग प्रशिक्षण में शिक्षक की मानसिकता और मनोदशा सबसे महत्वपूर्ण चीज है।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

योगयात्रा 2013

जनवरी से जून 2013 तक बिहार योग विद्यालय के संन्यासी, संन्यास प्रशिक्षार्थी तथा युवा योग मित्र मण्डल के सदस्य देश के विभिन्न भागों की योगयात्रा पर रवाना हुए। यह यात्रा बिहार योग विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित की गई थी। इस यात्रा के अन्तर्गत उन्होंने भारत के 20 राज्यों में कुल 232 योग शिविर संचालित कर सत्यानन्द योग के व्यापक प्रचार-प्रसार में नया कीर्तिमान स्थापित किया।

इस योगयात्रा में जहाँ एक ओर आधुनिक जीवनशैली वाले महानगरों में योग शिविर आयोजित हुए, वहीं छोटे-छोटे गाँवों और कस्बों में भी हुए, जहाँ के जीवन की गति आज भी वैसी ही मंथर है जैसी सदियों पहले थी। इन शिविरों में प्रशिक्षकों ने युवाओं-वृद्धों, अमीरों-गरीबों, शहरवालों-गाँववालों, सभी को सत्यानन्द योग का परिचय और प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविरों के प्रतिभागियों को, चाहे वे सत्यानन्द योग के पुराने अनुयायी हों या नए अभ्यासी, सभी को यह अनुभव हुआ कि वे एक महान् गुरु परम्परा के सम्पर्क में आकर उसकी कृपा के पात्र बने हैं। निस्संदेह इन छः महीनों में सत्यानन्द योग का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ है, जिसने उसकी सार्थकता, भूमिका और प्रतिष्ठा को सुनिश्चित कर दिया है।

कर्णाटक

अवधि—17 जनवरी से 11 फरवरी

मार्ग 1—बेंगलुरु, कोल्लेगल, मैसूर एवं चित्रदुर्ग

मार्ग 2—बेंगलुरु, शिमोगा, गोकर्ण, घाटप्रभा एवं

धारवाड़

कुल शिविर संख्या—16

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित

किए गए—27





आंध्र प्रदेश

अवधि-20 जनवरी से 21 फरवरी

मार्ग 1-गुंटुर, अदवी नेक्कलम्, पलकोल्लु, भीमावरम्, काइकालुरु, गुडीवाडा, अलावुरु, गन्नावाडा, अकिविदु, विजयवाडा एवं पोरंकी
मार्ग 2-हैदराबाद, सिकन्दराबाद, कुर्नूल, पियापल्ली, धोन एवं विशाखापट्टनम्

कुल शिविर संख्या-26

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित किए गए-45



पश्चिम बंगाल

अवधि-1 से 25 फरवरी

मार्ग -झोका, कोलकाता, संतोषपुर एवं बांगुर

कुल शिविर संख्या-8

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित किए गए-8





तमिल नाडु एवं केरल

अवधि—21 फरवरी से 13 मार्च
 मार्ग 1—चेन्नई, मधुरान्तकम्, कुड्डालोर एवं
 गोबीचेट्टीपलायम्
 मार्ग 2—चेन्नई एवं गोबीचेट्टीपलायम्
 कुल शिविर संख्या—16
 कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
 किए गए—27



असम एवं नागालैण्ड

अवधि—1 से 15 मार्च
 मार्ग—डिब्रुगढ़, टिटाबोर, दीमापुर एवं जोरहाट
 कुल शिविर संख्या—4
 कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
 किए गए—12



उत्तर प्रदेश

अवधि—1 से 21 मार्च
 मार्ग 1—सहारनपुर, मुज़फ्फरनगर, गाज़ियाबाद एवं
 मथुरा
 मार्ग 2—कानपुर एवं लखनऊ
 कुल शिविर संख्या—11
 कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
 किए गए—33





ओडिशा

अवधि-2 मार्च से 3 अप्रैल

मार्ग 1-राउरकेला, राजरंगपुर, झारसुगुडा, सम्बलपुर, बरगढ़, बोलांगीर, पटनागढ़ एवं भवानीपटना

मार्ग 2-पुरी, नीमपाद, भुवनेश्वर, बलिपटना, कटक, केन्द्रपाद, जयपुर, भद्रक, बलेश्वर, अंगुल, तालचेर एवं खुरदा

कुल शिविर संख्या-22

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित किए गए-31



राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

(दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश)

अवधि-4 से 14 मार्च

मार्ग 1-गुड़गाँव एवं दक्षिण दिल्ली

मार्ग 2-नोएडा एवं दिल्ली

मार्ग 3-पूर्वी एवं दक्षिण दिल्ली

कुल शिविर संख्या-9

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित किए गए-25



जम्मू-कश्मीर, पंजाब एवं राजस्थान

अवधि -25 मार्च से 30 अप्रैल

मार्ग-जम्मू, अमृतसर, जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा एवं उदयपुर

कुल शिविर संख्या-10

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित किए गए-22

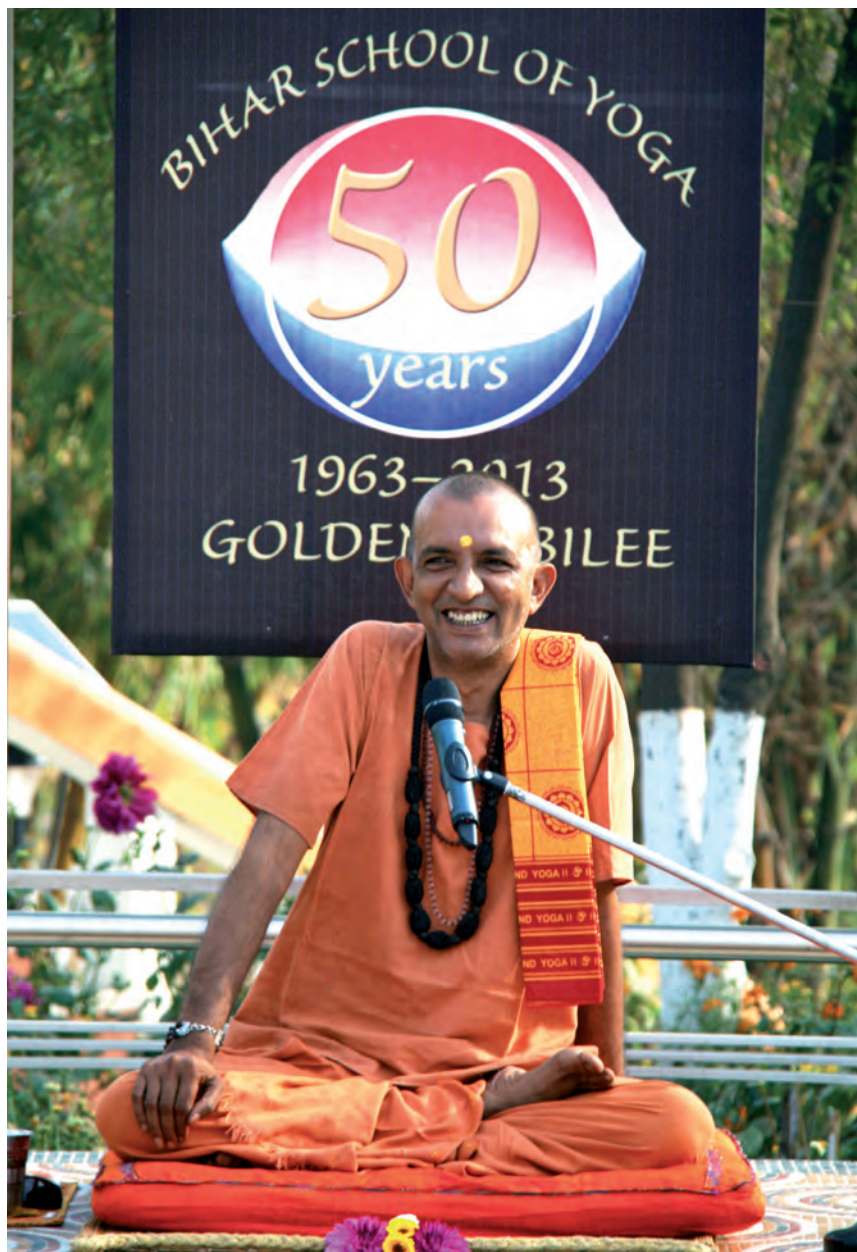


BIHAR SCHOOL OF YOGA



1963-2013

GOLDEN JUBILEE











Satyam Vatika







महाराष्ट्र

अवधि-1 अप्रैल से 5 मई

मार्ग 1-मुम्बई, थाणे, पुणे, कोल्हापुर, बेल्गाम,
औरंगाबाद एवं धुले

मार्ग 2-मुम्बई, नासिक, जलगाँव, अकोला, नागपुर
एवं गौन्दिया

कुल शिविर संख्या-19

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
किए गए-64



झारखण्ड

अवधि-30 मार्च से 1 मई

मार्ग 1-गिरिडीह, धनबाद एवं बोकारो

मार्ग 2-राँची एवं जमशेदपुर

कुल शिविर संख्या-17

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
किए गए-53



गोआ

अवधि-12 से 24 अप्रैल

मार्ग-बिचोलिम, शिओलिम, पंजिम, छोदन,
असगाँव एवं मडगाँव

कुल शिविर संख्या-7

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
किए गए-7



गुजरात

अवधि-1 से 30 मई

मार्ग 1-पधधार, भुज (कच्छ), मधोपार एवं हरिपार

मार्ग 2-अहमदाबाद

कुल शिविर संख्या-16

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
किए गए-23





छत्तीसगढ़

अवधि-1 से 26 मई

मार्ग 1-भिलाई, दुर्ग, राजनंदगाँव, कांकेर,
कोण्डागाँव एवं जगदलपुर

मार्ग 2-अकलतारा, रायगढ़, जांगीर, कोरबा एवं
खरसिया

कुल शिविर संख्या-18

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
किए गए-38



मध्य प्रदेश

अवधि-1 से 27 जून

मार्ग 1-जबलपुर, भोपाल एवं इन्दौर

मार्ग 2-सतना, रेवा, कटनी, सागर, छत्तरपुर एवं
पन्ना

कुल शिविर संख्या-13

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
किए गए-41



बिहार

अवधि-19 मई से 30 जून

मार्ग 1-पटना

मार्ग 2-सहरसा, अररिया, पूर्णिया, सिलीगुड़ी,
कटिहार एवं सुपौल

मार्ग 3-भागलपुर, धुबगंज, नौगाछिया एवं
कहलगाँव

मार्ग 4-लखीसराय एवं जमुई

मार्ग 5-नालन्दा

कुल शिविर संख्या-20

कुल स्थानों की संख्या जहाँ योग कार्यक्रम संचालित
किए गए-27



कार्यक्रम स्थान	संख्या
सार्वजनिक स्थान	158
विद्यालय	80
आश्रम/धार्मिक स्थान	59
महाविद्यालय	52
कॉरपोरेट संस्थान	32
योग केन्द्र	30
सरकारी संस्थान	24
स्वास्थ्य केन्द्र	21
स्पेशल नीड्स होम्स	9
जेल	9
अस्पताल	7

प्रत्येक राज्य में आयोजित शिविर (कुल 252 शिविर)

गोआ	7
पश्चिम बंगाल	8
दिल्ली एवं हरियाणा	9
जम्मू, पंजाब, राजस्थान	10
उत्तर प्रदेश	11
मध्य प्रदेश	13
तमिल नाडु एवं केरल	16
कर्णाटक	16
गुजरात	16
झारखण्ड	17
छत्तीसगढ़	18
महाराष्ट्र	19
बिहार	20
ओडिशा	22
आंध्र प्रदेश	26



योगयात्रा के अतिरिक्त वर्षभर निम्नांकित कार्यक्रम भी आयोजित किए गए—

आंध्र प्रदेश

स्वामी भक्तिचैतन्य और सत्यानन्द योगाश्रम, विजयवाड़ा ने फरवरी से अगस्त के बीच विविध विद्यालयों, संस्थाओं और समूहों के लिए योग कार्यक्रम संचालित किए, जिनसे कुल 6,864 विद्यार्थी, 355 शिक्षक और 4,455 अन्य प्रतिभागी लाभान्वित हुए।



बिहार

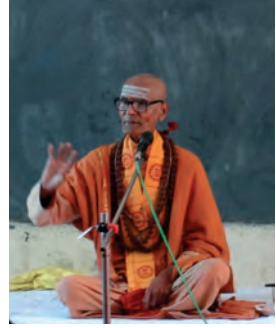
23 फरवरी को स्वामी ज्ञानभिक्षु ने फरदा, मुंगेर में आयोजित चौबीस-कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में भाग लिया। अपने उद्बोधन में उन्होंने एक हजार से अधिक साधकों को मंत्र और यज्ञ के महत्त्व से अवगत कराया।

2 जून को स्वामी निरंजनानन्द ने सीतारामपुर नजीरा का दौरा किया, जहाँ उन्होंने 300 से अधिक भक्तों और श्रद्धालुओं की सभा को संबोधित किया। अपने उद्बोधन में स्वामीजी ने श्री स्वामीजी और बिहार योग विद्यालय के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जनसमूह को संस्था और मिशन के भावी कार्यक्रमों के बारे में बताया। इस संदर्भ में उन्होंने आगामी विश्व योग सम्मेलन की योजनाओं की भी चर्चा की। सीतारामपुर नजीरा के निवासी शुरू से श्री स्वामीजी, स्वामीजी तथा योग मिशन के शुभचिंतक, हितैषी और सहायक रहे हैं। इन समर्पित तथा श्रद्धावान् भक्तों का आश्रम तथा उसकी गतिविधियों में आज तक अनुपम और अविस्मरणीय योगदान रहा है।



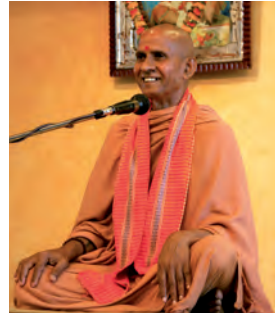
स्वामी निर्मलानन्द ने 29 और 30 जून को दानापुर, पटना के स्कूल ऑफ क्रियेटिव लर्निंग में आयोजित 'नैशनल वर्कशॉप ऑन होलिस्टिक लर्निंग' में भाग लिया जहाँ उन्होंने शिक्षा प्रणाली में योग की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

5 से 9 नवम्बर तक एन.टी.पी.सी., बाढ़ के नवयुग इंजिनियरिंग कम्पनी लिमिटेड में योग शिविर आयोजित किया गया, जिसमें कम्पनी के प्रबन्धकों और उनके परिवारों ने भाग लिया। शिविर का संचालन स्वामी ज्ञानभिक्षु ने किया और युवा योग मित्र मण्डल के बाल योगेश ने सहयोग प्रदान किया।



उत्तर प्रदेश

महाकुम्भ मेले के उपलक्ष्य में 30 जनवरी से 10 फरवरी तक 'गंगा महासभा समिति' के तत्वावधान में स्वामी गोरखनाथ ने प्रयाग में योग शिविर का संचालन किया। इस शिविर में देश-विदेश के 500 से अधिक साधकों ने भाग लिया। शिविर में योगाभ्यास सिखलाने के अलावा स्वामी गोरखनाथ ने सत्यानंद योग, आश्रम जीवन शैली तथा बिहार योग विद्यालय की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी भी दी।



अमेरिका, यूरोप और बाली

स्वामी सत्यधर्मा ने मई महीने में अमेरिका का दौरा किया और 17 से 19 तारीख तक तत्त्व शुद्धि की तांत्रिक विधि पर आधारित एक विशेष योग शिविर का संचालन किया। यह शिविर ओहायो राज्य के साउथफोर्क पार्क में आयोजित किया गया था और इसमें अमेरिका के विभिन्न राज्यों से आए 70 से अधिक योग साधकों ने भाग लिया।



इस शिविर के पश्चात् स्वामी सत्यधर्मा ने स्विट्ज़रलैंड के लिए प्रस्थान किया। 25 मई को उन्होंने ज्यूरिक के समत्वम् योग केन्द्र में 'हृदय के जागरण' विषय पर और 26 मई को फ्राइबर्ग के हैपीनेस योग हाउस में 'ध्यान की विधियाँ' विषय पर संगोष्ठियाँ संचालित कीं।

स्विट्ज़रलैंड से दक्षिण जर्मनी पहुँचकर उन्होंने फोक्ट नगर में 29 और 30 मई को सत्संग, हवन और



कीर्तन के कार्यक्रम संचालित किए और उसके बाद फोल्कलिंग्स नगर के 'सत्यम् साधना केन्द्र' में 31 मई से 2 जून तक योग शिविर संचालित किया। इस अवसर पर 'सत्यम् साधना केन्द्र' की रजत जयन्ती भी मनाई गई। प्राण विद्या पर आधारित इस शिविर में जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड और ऑस्ट्रिया के 60 से अधिक योग शिक्षकों और साधकों ने भाग लिया।

जर्मनी से स्वामी सत्यधर्मा बल्गेरिया गईं जहाँ उन्होंने 5 और 6 जून को सोफिया के सत्यानन्द योग संघ द्वारा आयोजित सत्संग, हवन और कीर्तन का कार्यक्रम संचालित किया। 7 जून को उन्होंने सोफिया के टाउन हॉल में 'दैनिक जीवन में ध्यान का महत्त्व' विषय पर सार्वजनिक व्याख्यान दिया, जिसमें 400 से अधिक श्रोतागण उपस्थित थे। 8 और 9 तारीख को उन्होंने सोफिया के निकट एक खेल केन्द्र में 'चक्रों का प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' विषय पर योग सेमिनार संचालित किया, जिसमें 300 से अधिक योग साधक और शिक्षक सम्मिलित हुए।

बल्गेरिया से वे हंगरी गईं जहाँ उन्होंने हंगेरियन योग संघ के नवनिर्मित आश्रम के सुंदर वातावरण में 'मन और ध्यान' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी संचालित की। इस संगोष्ठी में सर्बिया, रोमेनिया और हंगरी के 60 से अधिक योगाभ्यासी और शिक्षक शामिल हुए।

इसके पश्चात् वे बाली गईं जहाँ वे 22 से 28 जून तक रहीं। उबुद शहर के समीप उन्होंने 'योगालय' नामक एक नए योग केन्द्र का उद्घाटन कर वहाँ के साधकों को ध्यान की तांत्रिक पद्धतियों से परिचित कराया और साथ ही सत्संग, हवन और कीर्तन का प्रेरक कार्यक्रम संचालित किया।



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट

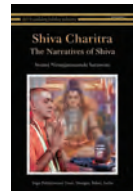
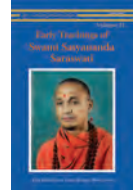
सन् 2012 के अंत तक अँग्रेजी में 84 और हिंदी में 53 पुस्तकें उपलब्ध थीं। सन् 2013 में अँग्रेजी की 43 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण तथा 51 नई पुस्तकों एवं 17 नई पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ। हिंदी की 14 पुस्तकों और 1 पुस्तिका का पुनर्मुद्रण तथा 18 नई पुस्तकों और 1 नई पुस्तिका का प्रकाशन हुआ। साथ ही तीन नई हिंदी-अँग्रेजी पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

बिहार योग विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती तथा विश्व योग सम्मेलन 2013 के उपलक्ष्य में एक विशेष अँग्रेजी-हिंदी स्मारिका संग्रह भी प्रकाशित किया गया जिसमें 'तंत्र दर्शन' को मिलाकर सात पुस्तकें शामिल थीं।



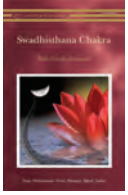
2013 में प्रकाशित नई अँग्रेजी पुस्तकें

- अर्ली टीचिंग्स ऑफ स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, भाग-2
- ईशावास्य उपनिषद्, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
- रामचरितमानस पर सत्संग, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
- रिख्यापीठ सत्संग-3 एवं 4, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
- यूरोप में सत्यानन्द योग, भाग 1-3, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
- योगा साधना पैनोरामा, भाग-6, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- ऑन दी विंग्स ऑफ दी स्वॉन, भाग-5 एवं 6, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- गीता दर्शन, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- ईशावास्य उपनिषद्, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- संकल्प पुत्री, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- भक्ति साधना, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- शिव चरित्र, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- प्राण विद्या, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती और स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती की शिक्षाओं से संकलित

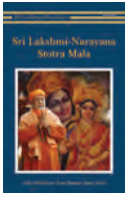




- बिहार स्कूल ऑफ योगा- दी विज्ञान ऑफ ए सेज, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती और स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती की शिक्षाओं से संकलित



- मुद्रा विज्ञान, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती और स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती की शिक्षाओं से संकलित
- स्वाधिष्ठान चक्र, ऋषि नित्यबोधानन्द
- मणिपुर चक्र, ऋषि नित्यबोधानन्द
- स्वामी शिवानन्द जी के अठारह सद्गुण और उनका प्रत्याहार से सम्बन्ध, स्वामी शिवमूर्ति सरस्वती
- स्वामी सत्यानन्द जी के साथ मेरी आध्यात्मिक यात्रा, संन्यासी विश्वप्रेम (श्रीमती प्रेमा बक्शी)
- दिव्यता की झलकें- श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ
- श्री लक्ष्मीनारायण स्तोत्रमाला

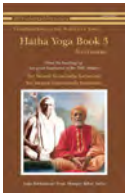


स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती की योगदृष्टि सत्संग शृंगुला पुस्तकें-

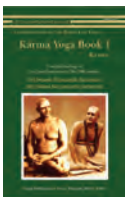
- साधना
- गणपति आराधना
- सत्यानन्द योग का विकास
- योग- दर्शन से साक्षात्कार तक
- अध्यात्म के अध्याय



स्वामी शिवानन्द एवं स्वामी सत्यानन्द सरस्वती की 'कॉन्वर्सेशन्स ऑन दी साइंस ऑफ योगा' शृंगुला



- हठ योग, भाग 3- षट्कर्म
- हठ योग, भाग 4- आसन
- हठ योग, भाग 5- प्राणायाम
- हठ योग, भाग 6- मुद्रा और बन्ध
- हठ योग, भाग 7- हठ योग और स्वास्थ्य
- हठ योग, भाग 8- दैनिक जीवन में हठ योग की साधना



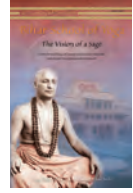
- कर्म योग, भाग 1- कर्म
- कर्म योग, भाग 2- जीवन का अनुभव
- कर्म योग, भाग 3- संसार
- कर्म योग, भाग 4- कर्म का उद्देश्य
- कर्म योग, भाग 5- मन की अभिव्यक्तियाँ

- कर्म योग, भाग 6— एक बेहतर दुनिया के लिए
 - कर्म योग, भाग 7— दैनिक जीवन में कर्म योग की साधना
- गोल्डन कलेक्शन 1-8—बिहार योग परम्परा के मौलिक प्रकाशनों का संकलन



2013 में प्रकाशित नई अँग्रेजी पुस्तिकाएँ

- बिहार योग विद्यालय का इतिहास, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- श्री सौंदर्य लहरी— साधना
- लिखित जप— मंत्र लेखन का विज्ञान, स्वामी शिवानन्द सरस्वती की शिक्षाओं से संकलित
- स्वान ध्यान— सिद्धान्त एवं अभ्यास, स्वामी सत्यधर्मा



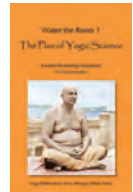
सत्यम् टेल्स—

- दिग्गज
- मिस्टिक्स फ्रॉम मून
- दी डेयरडेविल डॉल्फिन
- लेसन्स फॉर लाइफ



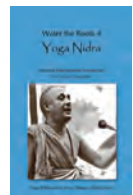
वॉटर दी रूट्स—आध्यात्मिक पथ पर प्रेरणा और निर्देश के लिए सरल, सुबोध पुस्तिकाओं का संग्रह

- योग विज्ञान का स्वरूप, स्वामी शिवानन्द सरस्वती
- आध्यात्मिक डायरी, स्वामी शिवानन्द सरस्वती
- मन को सम्भालो, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
- योग निद्रा, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
- मन का प्रबन्धन, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- कैप्सूल साधना, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- दिन की समीक्षा, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- स्वान सिद्धान्त — प्रतिभा, दुर्बलता, महत्वाकांक्षा एवं आवश्यकता, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- तीन मंत्रों की साधना, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



2013 में प्रकाशित नई हिंदी पुस्तकें

- ईशावास्योपनिषद्, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
- रिखियापीठ सत्संग 4, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती





- बच्चों के लिए योग शिक्षा 2, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- योग साधना माला 1, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती
- मेरे प्राणाधार, स्वामी आत्माभिषेक सरस्वती
- श्री हनुमान चालीसा, संन्यासी अवलोकितेश्वर
- गीता मानस अपरोक्षानुभूति, स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती
- योग प्रश्नावली 1 एवं 2
- सत्यम् आराधना (दो बार मुद्रित)



स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती की योगदृष्टि सत्संग शृंखला पुस्तकें—

- श्रीकृष्ण योग पद्धति
- अध्यात्म के अध्याय
- कर्म और कर्मयोग
- यौगिक जीवन
- स्वर्णिम संग्रह 3-6—बिहार योग परम्परा के मौलिक प्रकाशनों का संकलन



2013 में प्रकाशित नई हिंदी पुस्तिकाएँ

- बिहार योग विद्यालय का इतिहास, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



2013 में प्रकाशित नई हिंदी-अँग्रेजी पुस्तिकाएँ

- मेरे आराध्य के चरणों में
- शक्ति आवाहन
- श्री शिव स्तोत्र माला



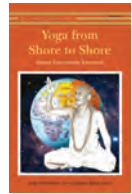
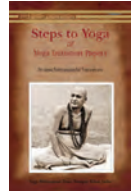
2013 में पुनर्मुद्रित अँग्रेजी पुस्तकें

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती द्वारा—

- टीचिंग्स ऑफ स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, भाग 5-6 (नवीन संस्करण)
- डायनेमिक्स ऑफ योगा
- टेमिंग दी कुण्डलिनी
- योगा एण्ड कार्डियोवास्कुलर मैनेजमेंट
- सूर्य नमस्कार

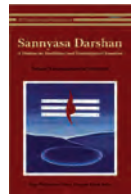


- मुक्ति के चार सोपान—महर्षि पतंजलि के योग सूत्रों पर आधिकारिक भाष्य
- स्टेप्स टू योगा एण्ड योगा इनिशियेशन पेपर्स (नवीन संस्करण)
- ए सिस्टेमेटिक कोर्स इन दी एन्शियेंट तांत्रिक टेक्नीक्स ऑफ योगा एण्ड क्रिया
- भक्ति योग सागर, भाग 2 एवं 6
- आसन प्राणायाम मुद्रा बन्ध
- नौ प्रधान उपनिषद्
- बच्चों के लिए योग शिक्षा—1
- अर्ली टीचिंग्स ऑफ स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, भाग—1
- हाई ऑन वेक्स
- योगा फ्रॉम शोर टू शोर (नवीन संस्करण)



स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती द्वारा—

- योग दर्शन— योग उपनिषदों का ज्ञान
- योग साधना पैनोरामा, भाग—2, 3, 4 एवं 5
- संन्यास दर्शन— पारम्परिक और आधुनिक संन्यास की व्यापक विवेचना
- बुद्धि, भावना और कर्म
- मन, मन का प्रबन्धन और राज योग



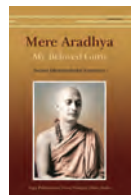
स्वामी शिवानन्द सरस्वती और स्वामी सत्यानन्द सरस्वती की शिक्षाओं से—

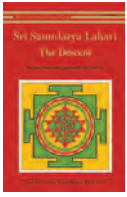
- महा समाधि— अन्तर्ध्यान— परम तत्त्व का साक्षात्कार
- साधना— रूपान्तरण का पथ
- रिखिया— एक ऋषि का स्वप्न



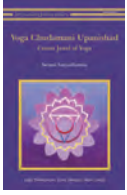
अन्य लेखकों द्वारा—

- मेरे आराध्य, स्वामी धर्मशक्ति सरस्वती
- श्री सौन्दर्य लहरी— अवरोहण की प्रक्रिया, स्वामी सत्यसंगानन्द सरस्वती
- तत्त्व शुद्धि— आंतरिक शुद्धि की तांत्रिक विधि, स्वामी सत्यसंगानन्द सरस्वती





- योग और रोग—डॉ. स्वामी कर्मानन्द सरस्वती
- नव योगिनी तंत्र— महिलाओं के लिए योग, स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती
- योग चूडामणि उपनिषद्—स्वामी सत्यधर्मा सरस्वती
- सिद्ध प्रार्थना
- मानस पुत्र (नवीन संस्करण)
- इटली में सत्यानन्द योग, भाग 1 एवं 2
- ग्रीस में सत्यानन्द योग, भाग 1 एवं 2
- तीर्थयात्रा 1 एवं 2

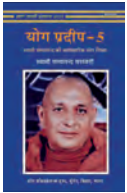


2013 में पुनर्मुद्रित हिंदी पुस्तकें

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती द्वारा—



- योग साधना
- सूर्य नमस्कार
- योग प्रदीप 2
- योग निद्रा
- बच्चों के लिए योग शिक्षा 1
- ध्यान— तंत्र के आलोक में
- मुक्ति के चार सोपान
- बम् लहरी



स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती द्वारा—

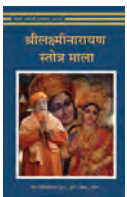
- बुद्धि, भावना और कर्म



स्वामी शिवानन्द सरस्वती एवं स्वामी सत्यानन्द सरस्वती की शिक्षाओं से—

- देवी

अन्य लेखकों द्वारा—



- मेरे आराध्य, स्वामी धर्मशक्ति सरस्वती
- रोग और योग, डॉ. स्वामी कर्मानन्द सरस्वती
- श्री लक्ष्मीनारायण स्तोत्रमाला
- सिद्ध प्रार्थना

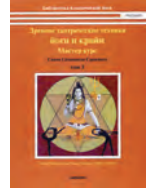
2013 में पुनर्मुद्रित हिंदी पुस्तिकाएँ

- सूर्य नमस्कार अभ्यास पुस्तिका

अन्य भाषाओं में अनुवाद

सन् 2013 में निम्नांकित पुस्तकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ—

- भक्ति युग— बल्गेरियन
- योगा एण्ड क्रिया (3 खण्डों में)— रूसी
- नव योगिनी तंत्र— रूसी
- हठ योग प्रदीपिका— रूसी
- योग निद्रा (पुनर्मुद्रण)— जर्मन
- कुण्डलिनी तंत्र (पुनर्मुद्रण)— जर्मन
- कुण्डलिनी तंत्र— इटालियन
- आसन प्राणायाम मुद्रा बन्ध— जापानी
- आसन प्राणायाम मुद्रा बन्ध— उर्दू



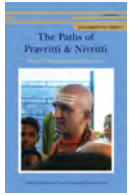
डिजिटल सामग्री

डिजिटल टेक्नॉलजी के व्यापक प्रचार ने सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान की प्रस्तुति, प्रसार और परिरक्षण की विधियों को बदल दिया है। बिहार योग विद्यालय के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में बिहार योग परम्परा की अनेक संस्थाओं ने बड़े पैमाने पर यौगिक और आध्यात्मिक ज्ञान को डिजिटल जगत् के लिए अनावृत किया।

2013 में स्मार्टफोन और टैब्लेट के लिए विमोचित एप्प

‘दिव्य दर्शन’ नामक एप्प में अनेक प्रकार की ऑडियो, वीडियो और अन्य प्रकाशित सामग्री समाहित है। इसे डाउनलोड करने का स्थान <http://biharyoga.dev/apps> है। यह एप्प योग शोध संस्थान द्वारा उपलब्ध कराया गया है।

2013 में विमोचित ई-पुस्तकें और ई-पत्रिकाएँ



इस वर्ष डिजिटल रूप में उपलब्ध किए गए प्रकाशन—

- प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग, योगदृष्टि सत्संग शृंखला, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती (योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट)
- योगा पत्रिका के 16 अंक, जुलाई 2012 से दिसम्बर 2013 तक (बिहार योग विद्यालय)
- योगविद्या पत्रिका के 16 अंक, जुलाई 2012 से दिसम्बर 2013 तक (बिहार योग विद्यालय)
- सत्य का आवाहन पत्रिका के दिसम्बर 2013 तक प्रकाशित 12 अंक (संन्यास पीठ)
- आराधना पत्रिका के दिसम्बर 2013 तक प्रकाशित 12 अंक (रिखियापीठ)



2013 में लाइव स्ट्रीमिंग

बिहार योग विद्यालय द्वारा लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से प्रसारित कार्यक्रम—

- विश्व योग सम्मेलन, 23 से 27 अक्टूबर 2013
- गंगा दर्शन में 3 नवम्बर को दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम

ऑडियो सीडी

सन् 2013 में विश्व योग सम्मेलन तथा बिहार योग विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 135 कॉम्पैक्ट डिस्क विमोचित किए गए और सम्मेलन के प्रसाद स्वरूप वितरित किए गए। इनमें स्वामी सत्यानन्द जी के पुराने सत्संगों की रिकॉर्डिंग और स्वामी निरंजनानन्द एवं मुंगेर के संन्यासियों द्वारा रिकॉर्ड की गईं नई सामग्री शामिल है।

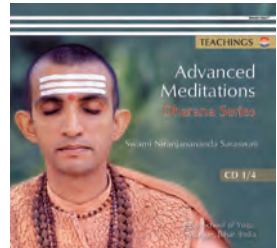
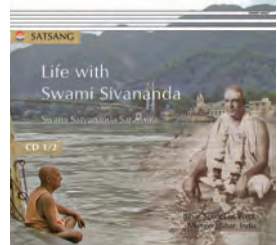
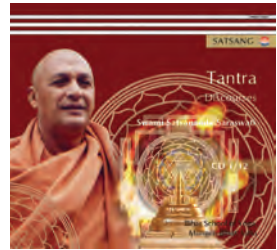
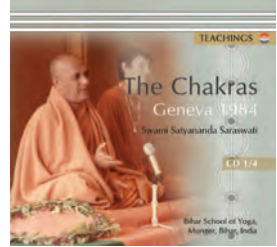
2013 में विमोचित नए अँग्रेजी ऑडियो सीडी

सत्संग शृंखला—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

- चक्र, जीनिवा 1984, 4 सीडी
- यूरोप, बेल्जियम 1977, 2 सीडी
- यूरोप, जर्मनी 1980
- यूरोप, इटली 1980, 2 सीडी
- यूरोप, इटली 1982-1984, 6 सीडी
- यूरोप, ग्रीस 1981, 2 सीडी
- यूरोप, फ्रांस 1980-1981, 4 सीडी
- यूरोप, स्विट्ज़र्लैण्ड 1979-1984, 9 सीडी
- यू.के. एवं आयरलैण्ड 1981-1985, 15 सीडी
- यू.के. 1983
- यू.एस.ए. 1982, 12 सीडी
- तंत्र, 12 सीडी
- लाइफ विद स्वामी शिवानन्द, 2 सीडी

टीचिंग्स शृंखला—स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

- उच्च ध्यान—धारणा शृंखला, 4 सीडी





2013 में विमोचित नए हिंदी ऑडियो सीडी

सत्संग शृंखला—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

- भगवद् गीता, 31 सीडी
- रामचरितमानस, 2 सीडी
- ईशावास्योपनिषद्, 8 सीडी



2013 में विमोचित नए स्तोत्र सीडी

सत्यम् सिंग्स

- तपोवन संगीत 2
- दर्शन, 2 सीडी

स्वान सिंग्स

- स्वान सिंग्स, 6 सीडी



संन्यास पीठ शृंखला

- सिद्ध शिवानन्द स्तोत्र
- सिद्ध सत्यानन्द स्तोत्र
- सिद्ध शिव स्तोत्र
- सिद्ध राम स्तोत्र
- नवरात्रि साधना
- स्तोत्र एवं मंत्रपाठ
- श्री सौन्दर्य लहरी
- श्री ललिता सहस्रनाम
- अर्पण—अमरगीत
- भाव



डीवीडी

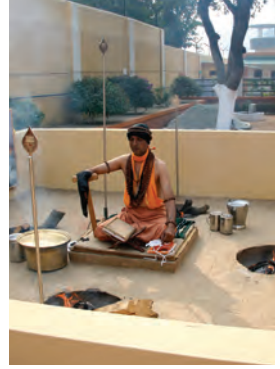
सन् 2013 में विश्व योग सम्मेलन तथा बिहार योग विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 126 नए डिजिटल वीडियो डिस्क विमोचित किए गए और सम्मेलन के प्रसाद रूप में वितरित किए गए। इनमें स्वामी सत्यानन्द जी के पुराने सत्संगों की रिकॉर्डिंग तथा गंगा दर्शन एवं संन्यास पीठ में सम्पन्न हुए हाल के कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग शामिल है।



2013 में विमोचित नए अंग्रेजी डीवीडी

सत्यम् स्पीक्स शृंखला—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

- ऑस्ट्रेलिया 1983-1984, 45 डीवीडी
- ग्रीस 1984-1985, 18 डीवीडी
- यू.के. 1982-1985, 18 डीवीडी
- बेल्जियम 1985, 5 डीवीडी
- मोरोक्को 1981, 4 डीवीडी
- न्यू ज़ीलैण्ड 1984, 3 डीवीडी
- स्पेन 1980, 2 डीवीडी
- फ्रांस 1983, 1 डीवीडी



संन्यास पीठ शृंखला

- पंचाग्नि—एक परम्परा का निर्वहन
- श्री कात्यायनी अनुष्ठान 2012-2014
- श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ 2013

2013 में विमोचित नए हिंदी डीवीडी

सत्यम् स्पीक्स शृंखला—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

- भारत 1982-1988, 30 डीवीडी



योग शोध संस्थान

विश्व योग सम्मेलन के कार्यक्रम और वर्षभर चली तैयारियों के कारण इस वर्ष योग शोध संस्थान की शोध परियोजनाएँ स्थगित रहीं।

बाल योग मित्र मण्डल

बाल योग मित्र मण्डल के बच्चों को हमने तीन लक्ष्य दिए हैं— योग के द्वारा संस्कार को प्राप्त करना; योग के द्वारा ऐसी प्रतिभा को प्राप्त करना जिससे बिना किसी पर आश्रित रहे अपना जीवन चला सकें और योग को आधार बनाकर अपने जीवन को संस्कृति से युक्त करना। संस्कार, स्वावलम्बन और संस्कृति— यही बाल योग मित्र मण्डल के तीन ध्येय हैं। जब कभी हम बाहर जाते हैं, लोगों को यही कहते हैं कि आप हमारे बाल योग मित्र मण्डल के किसी भी बच्चे को कहीं पर भी खड़ा कर दो, वह हर क्षेत्र में निपुण होगा, प्रवीण होगा और हर दायित्व को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभायेगा। यही सच्चे मनुष्य की पहचान भी है।

एक बार किसी पत्रकार ने हमारे गुरुजी से प्रश्न किया था कि आप इतने सालों से योग कर रहे हैं, आपको जरूर कोई सिद्धि प्राप्त हुई होगी, वह कौन-सी सिद्धि है, बताइये। श्री स्वामीजी ने कहा, 'मेरे पास अगर कोई सिद्धि है तो यही कि मैं अपने दोनों पैरों पर अकेला खड़ा हो सकता हूँ। यही मेरे जीवन की उपलब्धि है।' यही वह सिद्धि है जो हम चाहते हैं कि हर बच्चा योग से प्राप्त करे।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



बाल योग दिवस

बसंत पंचमी तथा बिहार योग विद्यालय के स्थापना दिवस के चार-दिवसीय उत्सव के दौरान 14 फरवरी को आश्रम में बाल योग दिवस मनाया गया। सन् 1995 में इसी दिन स्वामी निरंजनानन्द की प्रेरणा से बाल योग मित्र मण्डल की स्थापना हुई थी। यह बच्चों का एक बृहत् योग आन्दोलन है जिसके सदस्यों की संख्या आज देशभर में 1,50,000 से अधिक है। बाल योग दिवस के अवसर पर इन बच्चों ने अपनी विभिन्न गतिविधियों और उपलब्धियों का उल्लेख किया और योगासन, कराटे, आधुनिक नृत्य, मंत्रोच्चार तथा चित्रकारी में अपने हुनर का प्रभावशाली परिचय दिया।

बसंत पंचमी कार्यक्रम के चारों दिन बाल योग मित्र मण्डल के बच्चों ने अपने सुमधुर मंत्रपाठ, स्तोत्रपाठ और विधिवत् हवन सम्पादन से सबको बेहद प्रभावित किया।



विश्व योग सम्मेलन

विश्व योग सम्मेलन की तैयारियों के दौर में और फिर वास्तविक कार्यक्रम के समय बाल योग मित्र मण्डल के होनहार बच्चे सम्मेलन से जुड़े सभी क्षेत्रों और विभागों में अपनी सेवाएँ तन्मयता से अर्पित करते रहे। विश्व योग सम्मेलन में बाल योग मित्र मण्डल के कुल 600 बच्चों ने भाग लिया। इनमें से 250 बच्चों का पण्डाल व्यवस्था, अतिथियों का स्वागत, पोलो मैदान में स्तोत्रपाठ और कीर्तन, सत्यम् वाटिका में अखण्ड कीर्तन, पूजा एवं हवन, भेंट, दीक्षा, अतिथियों को दिशा-निर्देश देना, भोजन परोसना और स्वामीजी की सुरक्षा जैसी विभिन्न सेवाओं के लिए चयन किया गया था।

सभी बच्चों ने अपनी निर्धारित सेवा बखूबी निभाई। पौ फटते ही वे पैदल या साइकिल से आश्रम पहुँच जाते। कई बच्चे दूर से आते थे, लेकिन फिर भी वे समय से पहले पहुँच जाते। आश्रम पहुँचकर वे अपने प्रभारी को रिपोर्ट करते, जल्दी से नाश्ता कर





लेते और फिर अपनी निर्धारित सेवा पर लग जाते। दिनभर वे मन लगाकर अपनी सेवा करते और बीच में अगर खाली समय मिलता तो संध्या कार्यक्रम की विभिन्न प्रस्तुतियों की तैयारी करते।

संध्या कार्यक्रम के दौरान इन बच्चों को दुनियाभर से आए प्रतिनिधियों के सामने नृत्य और कराटे जैसे हुनर प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बच्चों के लिए यह बात विशेष मायने रखती थी क्योंकि उन्होंने इन प्रस्तुतियों को बेहतरीन बनाने के लिए बहुत मेहनत की थी। सभी दर्शक उनकी प्रतिभा और आत्म-विश्वास से बेहद प्रभावित हुए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से अनुभवी बच्चों के अलावा नए बच्चों को भी अपनी प्रतिभा जागृत और प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ।



बाल योग मित्र मण्डल के एक सदस्य को 'बच्चों पर योग के प्रभावों का अनुसंधान—एक अनुभव' विषय पर वर्कशॉप प्रस्तुत करने के लिए चयनित किया गया। इस वर्कशॉप में 100 से अधिक प्रतिभागी सम्मिलित हुए और सभी इस अनोखे अनुसंधान, इसके परिणामों तथा इसकी प्रस्तुति से बहुत प्रभावित हुए।



युवा योग मित्र मण्डल



हमने युवाओं के लिए जो आन्दोलन चलाया है, उसका नाम युवा योग मित्र मण्डल रखा है। इस आन्दोलन से सम्बद्ध युवाओं को हमने तीन लक्ष्य दिए हैं— योग को सीखना और अपने जीवन में उतारना; अपने आप को किसी विशेष, सकारात्मक प्रयोजन के लिए समर्पित करना; और सेवा की भावना विकसित करना। योग, समर्पण और सेवा के इन तीन लक्ष्यों को सिद्ध करने के लिए ये युवा कटिबद्ध हैं। सन् 2013 के विश्व योग सम्मेलन में योगदान देने के लिए 1000 से अधिक युवा इस आन्दोलन में सम्मिलित हुए हैं। युवा योग मित्र मण्डल की स्थापना 2 अक्टूबर सन् 2000 को गाँधी जयन्ती के अवसर पर की गई थी। इस विशेष तिथि को चुनने का कारण यह कि महात्मा गाँधी का जीवन त्याग, समर्पण, सेवा एवं आत्म-विश्वास का प्रतीक है और यही इन युवाओं का आदर्श होना चाहिए।

— स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



योगयात्रा 2013

अप्रैल से जून तक युवा योग मित्रमण्डल के सदस्यों ने अखिल भारतीय योगयात्रा में भाग लिया। वे आश्रम के संन्यासियों और संन्यास प्रशिक्षार्थियों के साथ झारखण्ड, मध्य प्रदेश और बिहार गए, जहाँ उन्होंने अनेक शिविरों के संचालन में अपना योगदान देकर योगयात्रा की सफलता सुनिश्चित की।

योग फाउण्डेशन सत्र



29 से 31 मई तक युवा योग मित्र मण्डल ने मुंगेर जिले के स्कूलों और कॉलेजों के 600 से अधिक छात्रों के लिए एक प्रारम्भिक योग फाउण्डेशन सत्र का आयोजन किया। स्वामी गोरखनाथ द्वारा संचालित इस सत्र में आसन, प्राणायाम, कीर्तन और भजन सम्मिलित थे। सत्र के समापन पर स्वामी निरंजनानन्द ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। अपने प्रेरक सत्संग में उन्होंने कहा कि योग को सीखने और सिखाने वाला व्यक्ति हर जगह सम्मानित होता है।



युवा योग मित्र मण्डल स्थापना दिवस

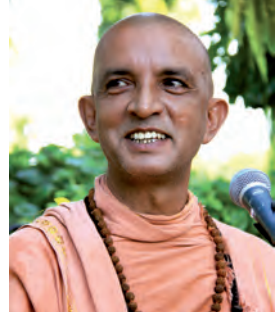
युवा योग मित्र मण्डल का 13वाँ स्थापना दिवस 2 अक्टूबर को पादुका दर्शन में प्रातः 8 से 10 बजे तक बड़े आनन्द और उत्साह के साथ मनाया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन मण्डल के युवाओं ने किया, जिन्होंने बड़ी तत्परता से कार्यक्रम स्थल की तैयारी, अतिथियों का स्वागत और भजन, कीर्तन तथा हवन का संचालन किया।



इस अवसर पर अपने उद्बोधन में स्वामी सूर्यप्रकाश ने स्वामीजी द्वारा युवा योग मित्र मण्डल को दिये गये तीन लक्ष्यों—योग, सेवा और समर्पण पर प्रकाश डाला और स्वामी शंकरानन्द ने उपस्थित युवाओं और उनके अभिभावकों को मनुष्य जीवन के वास्तविक प्रयोजन का स्मरण कराया।

अपने सत्संग में स्वामीजी ने मुंगेर से शुरू हुए दो बृहत् आन्दोलनों—बाल योग मित्र मण्डल और युवा योग मित्र मण्डल की चर्चा करते हुए उपस्थित जनसमूह को युवाओं द्वारा देशभर में, विशेषकर भुज, गुजरात के भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में किए गए प्रशंसनीय सेवाकार्यों से अवगत कराया। उन्होंने आगे कहा, 'मुझे पूरा विश्वास है कि युवा योग मित्र मण्डल के सदस्य आगामी विश्व योग सम्मेलन को सफल और स्मरणीय बनाने में पूरी जी-जान लगा देंगे।' उन्होंने उपस्थित अभिभावकों को आश्वस्त किया कि उनके बच्चे यौगिक संस्कृति के राजदूत बनकर आने वाले समय में दुनिया में अपना नाम जरूर रोशन करेंगे।

कार्यक्रम में युवा योग मित्र मण्डल के 750 से अधिक सदस्यों के अलावा 800 से अधिक अभिभावकों और परिवारजनों ने भाग लिया, जिन्हें इस अवसर पर विशेष प्रसाद दिया गया।



विश्व योग सम्मेलन

युवा योग मित्र मण्डल के 800 से अधिक सदस्य 20 अक्टूबर को गंगा दर्शन पहुँचे और विश्व योग सम्मेलन के सफल संचालन हेतु विभिन्न सेवा-कार्यों में तत्परता से लग गए। चाहे वह गंगा दर्शन का कोई कार्यक्रम स्थल हो, या पोलो मैदान, पादुका दर्शन, बाहरी आवास गृह, संग्रहालय में स्थित प्रतिनिधि स्वागत केन्द्र या जमालपुर, किउल अथवा लखीसराय का रेलवे स्टेशन, ऐसा कोई स्थान नहीं था जहाँ युवा योग मित्र मण्डल के सदस्य तत्परता और कर्मठता के साथ अपनी सेवाएँ अर्पित न कर रहे हों।

युवाओं के मुख्य दायित्वों में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का स्वागत करना; विभिन्न कार्यक्रम एवं आवासीय स्थलों की साफ-सफाई और रख-रखाव करना; सभी स्थानों में अनुशासन





और मर्यादा बनाए रखना; ट्रैफिक नियंत्रण एवं सुरक्षा व्यवस्था; 'मे आई हेल्प यू' दलों के माध्यम से अतिथियों का मार्गदर्शन और उनकी सहायता करना; तथा आवास भवनों से कार्यक्रम स्थल तक प्रतिनिधियों को लाने और ले जाने की व्यवस्था करना शामिल था। इसके अलावा वे गंगा दर्शन के विभिन्न कार्यक्रम स्थलों तथा पोलो मैदान में प्रतिनिधियों का स्वागत करते और उन्हें उचित स्थान पर बैठाते। भोजन के समय योगविद्या तथा पादुका दर्शन परिसरों में प्रतिनिधियों का निर्देशन करते और उन्हें भोजन परोसते। साथ ही पोलो मैदान में प्रतिनिधियों के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराते और शौचालयों की व्यवस्था देखते।

अनेक युवा भेंट और दीक्षा विभागों में भी सक्रिय रूप से संलग्न थे, जबकि अन्य युवा दिनभर बाहरी आवास स्थलों पर रहकर अतिथियों की हर सुख-सुविधा का ख्याल रखते। युवाओं के एक दल ने पोलो मैदान के वर्कशॉप सत्र में आसनों का प्रभावशाली प्रदर्शन भी प्रस्तुत किया।

पूरे सम्मेलन के दौरान युवाओं ने दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय दिया और मैत्री एवं सौहार्द्रपूर्ण भावना के साथ काम करते हुए यह सुनिश्चित किया कि सम्मेलन में आए प्रतिनिधियों के आतिथ्य में कहीं कोई कमी न रह जाए और यह उनके लिए एक यादगार सम्मेलन बन जाए।

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about newspaper, YOGAVIDYA, to be published in the first issue every year after the last day of February.

Place of publication: Munger. Periodicity of its publication: monthly. Printer's name: Thomson Press India Ltd., 18/35 Milestone, Delhi Mathura Road, Faridabad, Haryana – 121007. Nationality: Indian. Publisher's name: Bihar School of Yoga. Nationality: Indian. Address: Bihar School of Yoga, Ganga Darshan, Fort, Munger – 811201, Bihar. Editor's name: Swami Shaktimitrananda Saraswati. Nationality: Indian. Address: Bihar School of Yoga, Ganga Darshan, Fort, Munger – 811201, Bihar.

Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital: Bihar School of Yoga, Ganga Darshan, Fort, Munger – 811201 Bihar.

I, Swami Shaktimitrananda Saraswati, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 25 March 2001

Sd/- (Swami Shaktimitrananda Saraswati) Editor.



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट

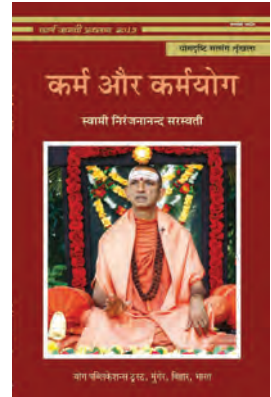
कर्म और कर्मयोग

स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

पृष्ठ 85, ISBN: 978-93-81620-60-1

‘कर्म मानव प्रकृति की अभिव्यक्ति है। यह ऐसी चीज है जो सहज और स्वाभाविक रूप से व्यक्त होती है, और देखा जाए तो हमारा समस्त जीवन कर्म की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं। यह सारी सृष्टि कर्म की साक्षात् अभिव्यक्ति ही है, जिसमें कर्म का बीज दैवी इच्छा से आरोपित किया गया है।’

कर्म और कर्मयोग स्वामीजी के फरवरी 2010 के योगदृष्टि सत्संगों का विषय था। ये प्रबोधक सत्संग इस बहुचर्चित विषय को एक नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने के साथ-साथ उत्कृष्ट जीवन जीने का सरल मार्ग प्रशस्त करते हैं। इन सत्संगों में विषय के सैद्धान्तिक पक्षों के साथ-साथ व्यावहारिक पक्षों का सरस, सुबोध निरूपण है।



नया प्रकाशन

पुस्तकों की मूल्य सूची एवं क्रयादेश प्रपत्र प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, गंगा दर्शन, फोर्ट, मुंगेर, बिहार 811201

दूरभाष : 91-6344-222430, 6344-228603, 09304799615 फैक्स : 91-6344-220169

☑ कृपया जवाब के लिए अपना पता लिखा, डाकटिकट लगा लिफाफा भेजें, जिसके बिना आपके आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा।

सत्यानन्द योग वेबसाइट

www.biharyoga.net

यह बिहार योग पद्धति की मुख्य वेबसाइट है जिसमें बिहार योग विद्यालय, बिहार योग भारती, शिवानन्द मठ, सीता कल्याणम् महोत्सव तथा योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट की जानकारियाँ उपलब्ध हैं।

www.rikhiapeeth.in

इस वेबसाइट पर प्रतिदिन श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती का विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर एक नया सत्संग उपलब्ध रहता है।



‘यौगिक जीवन’ स्वामी निरंजन के संग

www.biharyoga.net/living-yoga/ पर श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के उत्तराधिकारी स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती के मिशन सम्बन्धी लेख, संदेश एवं समाचार उपलब्ध हैं।

www.yogamag.net

योगा पत्रिका के लेखों के संग्रह तथा पूरे विश्व में सत्यानन्द योग केन्द्रों और शिक्षकों के सम्पर्क सूत्रों और गतिविधियों की जानकारी के लिए इस वेबसाइट को देखें।

आवाहन वेबसाइट

www.biharyoga.net/sannyasa-peeth/avahan/ पर संन्यास पीठ की द्वैमासिक पत्रिका, सत्य का आवाहन उपलब्ध है, जिसमें श्री स्वामी शिवानन्द, श्री स्वामी सत्यानन्द एवं स्वामी निरंजनानन्द की शिक्षाओं तथा संन्यास पीठ की गतिविधियों की जानकारी है।



SATYANANDA YOGA
BIHAR



- Registered with the Department of Post, India
Under No. HR/FBD/298/13-15
Office of posting: BPC Faridabad
Date of posting: 1st-7th of every month
- Registered with the Registrar of Newspapers, India
Under No. BIHHIN/2002/6306

गंगादर्शन के सत्र एवं कार्यक्रम 2014

मार्च 1-21	योग शिक्षक प्रशिक्षण सत्र (हिन्दी)
मार्च 3-20	योग स्वास्थ्य रक्षा सत्र-दमा (हिन्दी)
अप्रैल 3-20	योग स्वास्थ्य रक्षा सत्र-मधुमेह (हिन्दी)
जून 1- जुलाई 25	द्विमासिक योग विज्ञान एवं जीवनशैली परिचय सत्र (हिन्दी)
जुलाई 12	गुरु पादुका पूजन
अगस्त 2014- मई 2015	योग अध्ययन में डिप्लोमा (अंग्रेजी)
अगस्त 1-21	योग शिक्षक प्रशिक्षण सत्र (अंग्रेजी)
अगस्त 3-20	योग स्वास्थ्य रक्षा सत्र-गठिया एवं पीठदर्द (हिन्दी)
सितम्बर 15-30	योग स्वास्थ्य रक्षा सत्र-सामान्य (हिन्दी)
सितम्बर 8	स्वामी शिवानन्द जन्मोत्सव
सितम्बर 12	स्वामी सत्यानन्द संन्यास दिवस
अक्टूबर 1- जनवरी 25	चातुर्मासिक योग अध्ययन सत्र (अंग्रेजी)
दिसम्बर 25	स्वामी सत्यानन्द जन्मदिवस
प्रत्येक शनिवार	महामृत्युंजय हवन
प्रत्येक एकादशी	भगवद् गीता पाठ
प्रत्येक पूर्णिमा	सुन्दरकाण्ड पाठ
प्रत्येक माह के 5वें और 6वें दिवस	श्री स्वामी सत्यानन्द जी की महासमाधि का स्मरणोत्सव
प्रत्येक माह के 12वें दिवस	अखण्ड रामचरितमानस पाठ

आश्रम में मोबाइल फोन लाना वर्जित है। अपना मोबाइल फोन कदापि अपने साथ न लाएँ।

उपर्युक्त सत्रों/ कार्यक्रमों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

बिहार योग विद्यालय, गंगादर्शन, मुंगेर, बिहार 811201

फोन : 06344-222430, 06344-228603, 9304799615 फैक्स : 06344-220169

वेबसाइट : www.biharyoga.net

☒ अन्य किसी जानकारी हेतु अपना पता लिखा और डाक टिकट लगा हुआ लिफाफा भेजें, जिसके बिना उत्तर नहीं दिया जायेगा।